जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

‘‘ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ’’

–सफ़दर हाश्मी

एक जिज्ञासु, नन्ही बच्ची की अनूठी कथा।
इसमें कल्पनाशीलता, विज्ञान, रोमांच के साथ-साथ
बालमन का अद्‌भुत चित्रण है।
दुनिया की यह महान चित्रकथा आपका मन मोह लेगी।
इसके आकर्षक चित्रों को आप बार-बार देखना चाहेंगे।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 12 रुपए **B-65**

ऊँची उड़ान

शिर्ले ह्यूज़

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

ऊँची उड़ान
शिर्ले ह्यूज़

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 2003

मूल्य: 12 रुपए

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

ऊँची उड़ान

शिर्ले ह्यूज़

ऊँची उड़ान

एक नन्ही बच्ची की अत्यंत कल्पनाशील चित्रकथा। बच्ची चिड़ियों को उड़ते देखती है। उसका मन भी उड़ने को करता है। वो हाथों को पंखों की तरह पसारे दौड़ती है, पर एक पत्थर से टकराकर धम्म से गिर जाती है। कार्ड के पंखों से भी कोई लाभ नहीं होता है। गैस के गुब्बारे पेड़ के कांटों में चुभकर फट जाते हैं। बच्ची के उड़ने के सभी प्रयास विफल होते हैं। बच्ची एकदम उदास हो जाती है।

तभी डाकिया बच्ची के लिए एक पार्सल लाता है। पार्सल में एक बड़ा अंडा है। अंडे को खाकर बच्ची में एक अद्‌भुत परिवर्तन आता है। अब वो उड़ने लगती है। वो हवा में कलाबाज़ियां लगाती हुई घर से बाहर निकलती है। माता-पिता उसके पीछे-पीछे दौड़ते हैं। बस स्टैंड पर खड़े मुसाफिर भी उसका पीछा करते हैं। इस तरह धीरे-धीरे कारवां बढ़ता जाता है। एक वैज्ञानिक जब बच्ची को अपनी दूरबीन से देखता है तो वो हक्का-बक्का रह जाता है। वो बच्ची को एक तितली पकड़ने वाले जाल से पकड़ने की कोशिश करता है। उसके बाद बच्ची अपने स्कूल जाती है और कक्षा की खिड़की के बाहर, उल्टी होकर खड़ी हो जाती है। स्कूल के सभी बच्चे उसके करतब देखने सड़क पर आ जाते हैं।

फिर वैज्ञानिक बच्ची को पकड़ने के लिए गर्म-हवा के गुब्बारे में उड़ता है। बच्ची उसके सभी प्रयासों को असफल कर देती है। अंत में बच्ची एक टीवी के एंटिना पर सिर के बल खड़ी होकर वैज्ञानिक को चिढ़ाती है। वैज्ञानिक, बच्ची को पकड़ने की कोशिश करता है पर उसके हाथ में केवल उसका स्वेटर ही आता है। एंटिना की छड़ टूट कर बच्ची के हाथ में आ जाती है। फिर बच्ची गुस्से में आकर गर्म-हवा के गुब्बारे में छड़ को घुसा देती है। गुब्बारे में छेद हो जाता है और वो धीरे-धीरे करके ज़मीन पर आकर गिरता है।

बच्ची को कोई चोट नहीं लगती है। वो हीरोइन की तरह फटे गुब्बारे में से बाहर निकलती है। स्कूल के दोस्त उससे मिलकर बेहद खुश होते हैं। वैज्ञानिक भी बच्ची से हाथ मिलाता है। मां-बाप बच्ची को सुरक्षित देखकर प्रसन्न होते हैं। अंत में बच्ची, लोगों के पूरे कारवां से, अलविदा कहती है। घर की ओर जाते समय उसका पूरा ध्यान केवल चिड़ियों की उड़ान में ही लगा होता है। घर में मां बच्ची को खाने के लिए एक उबला अंडा देती है। परंतु नन्ही बच्ची का खाने में मन नहीं है। वो अब भी अपनी कल्पना की दुनिया में खोई है।

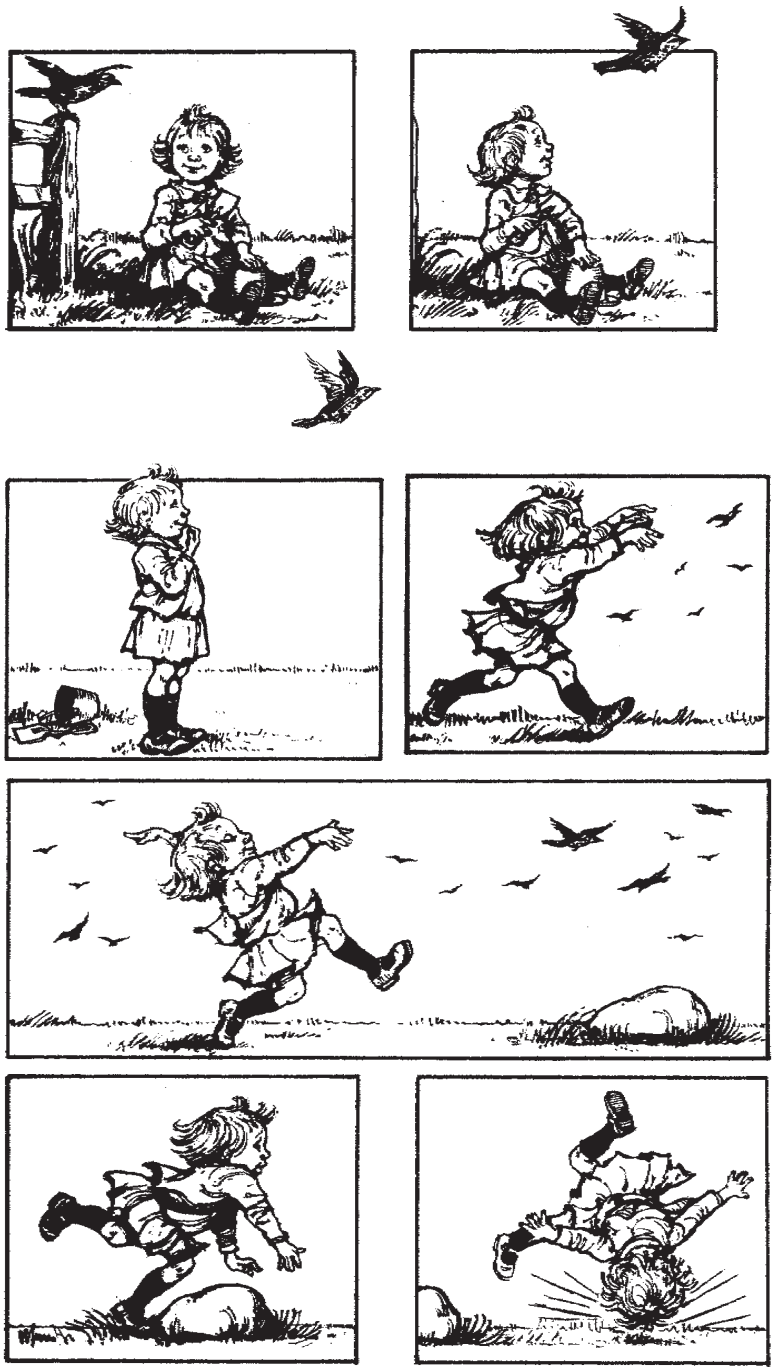

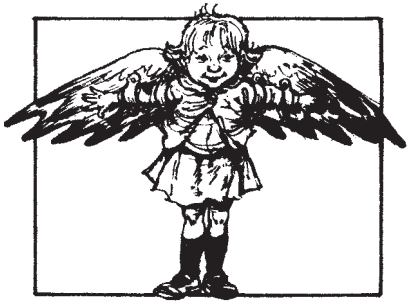

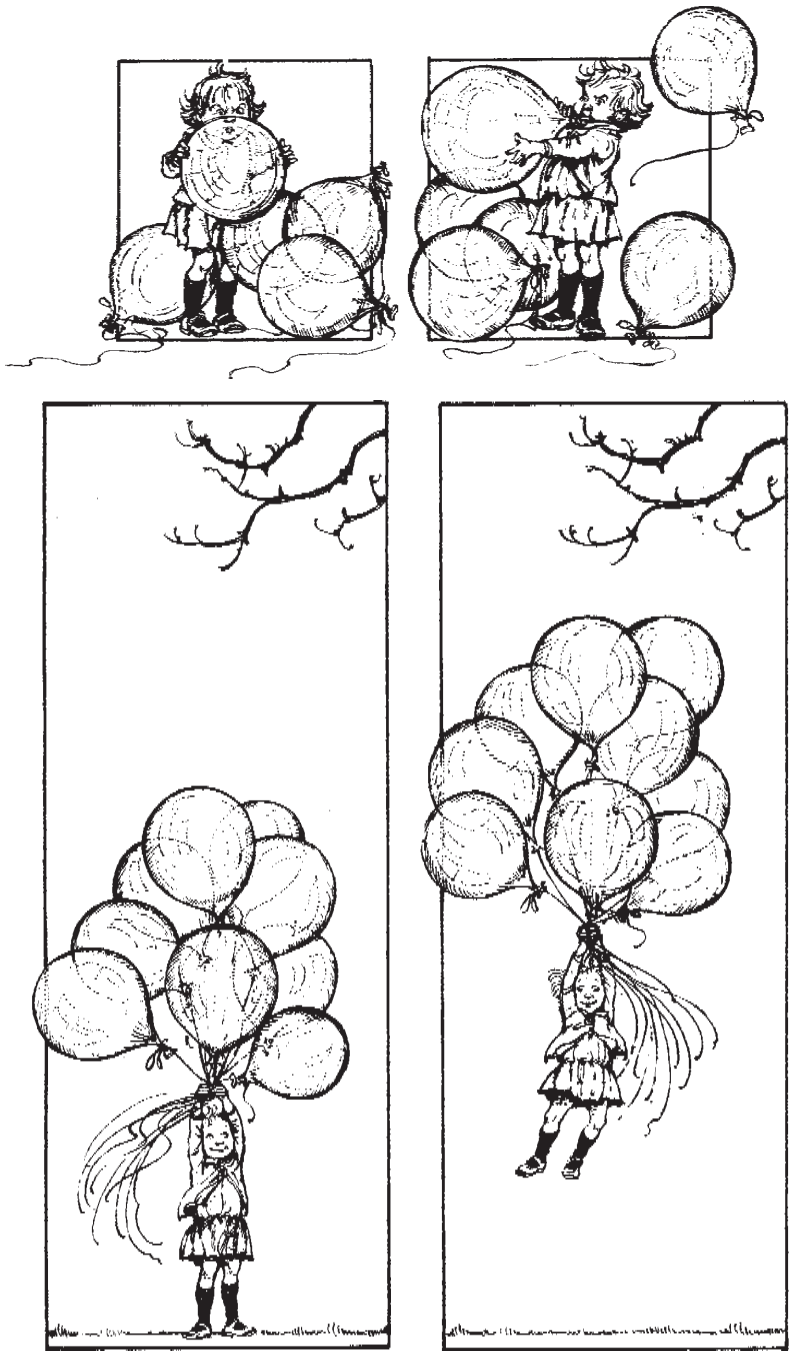

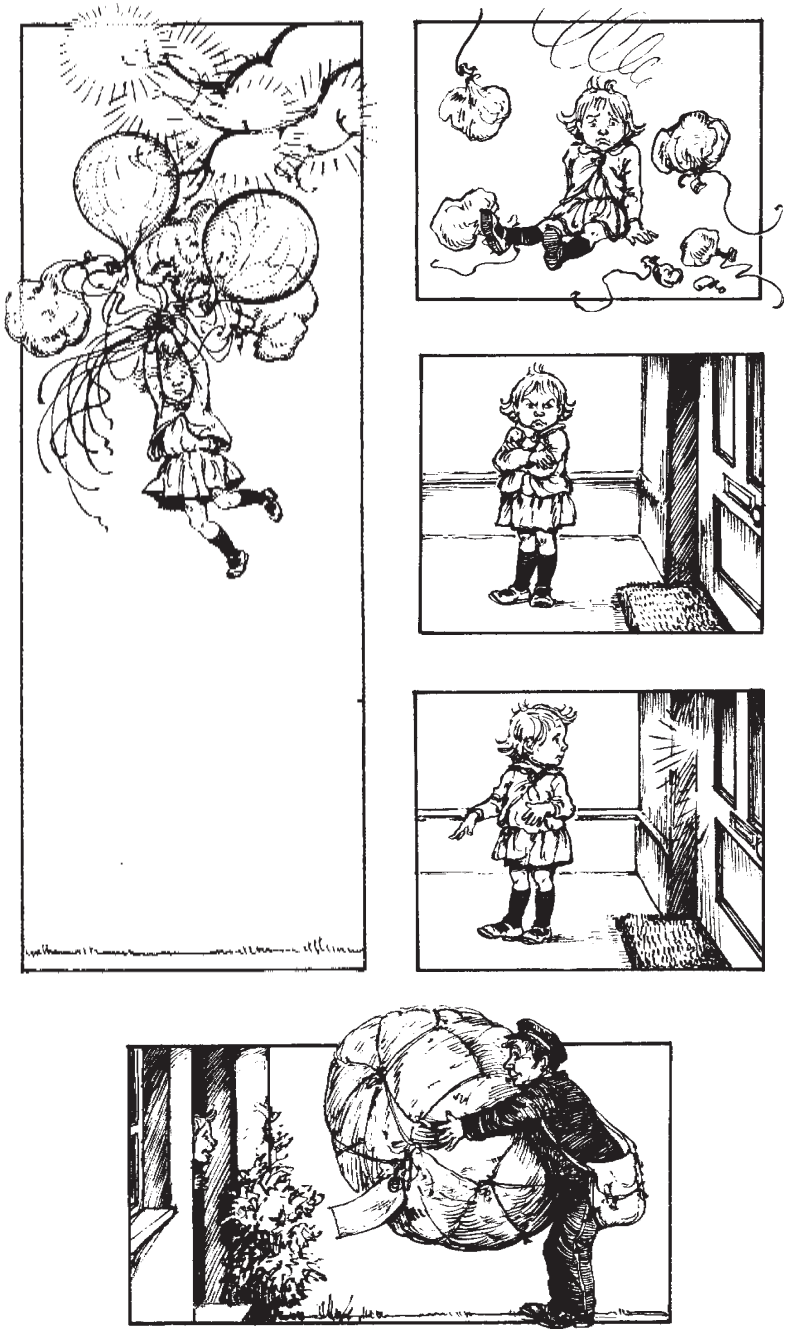

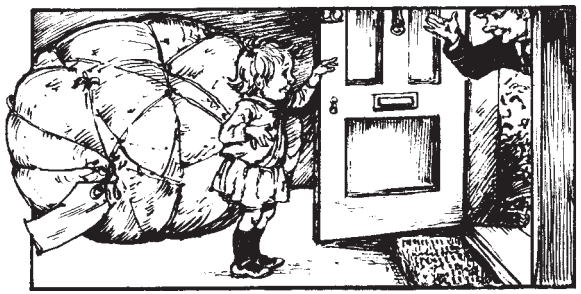

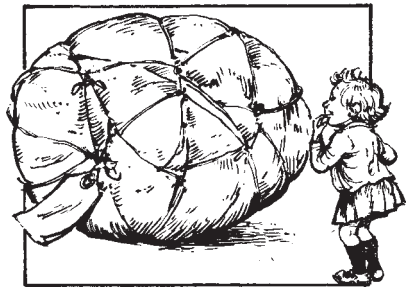

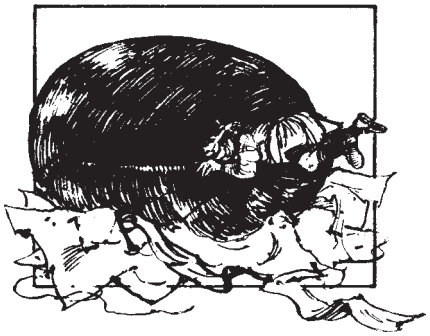

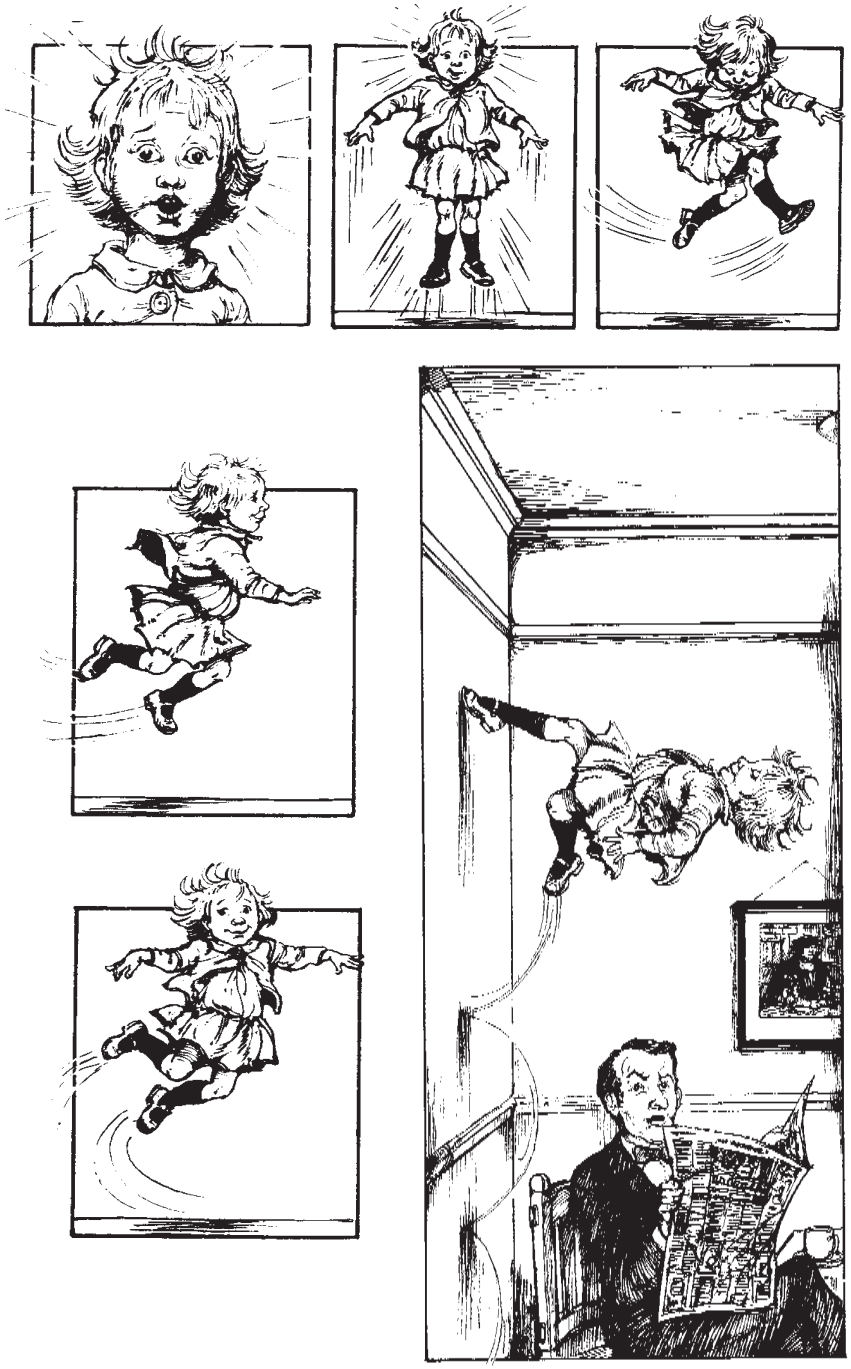

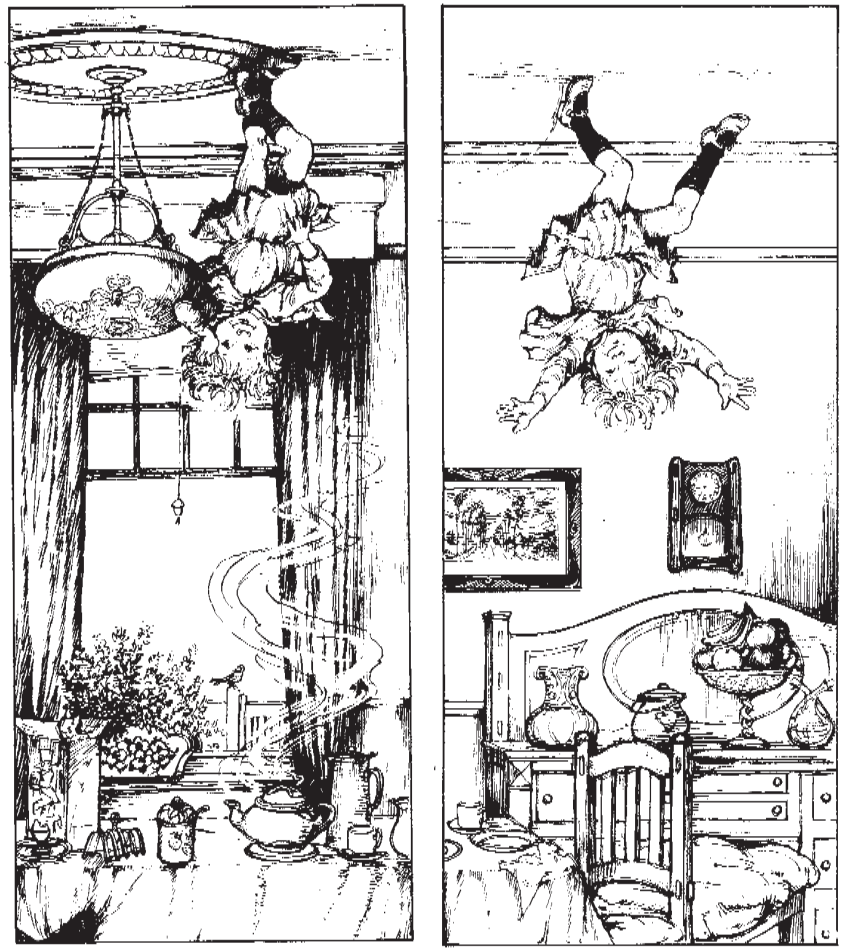

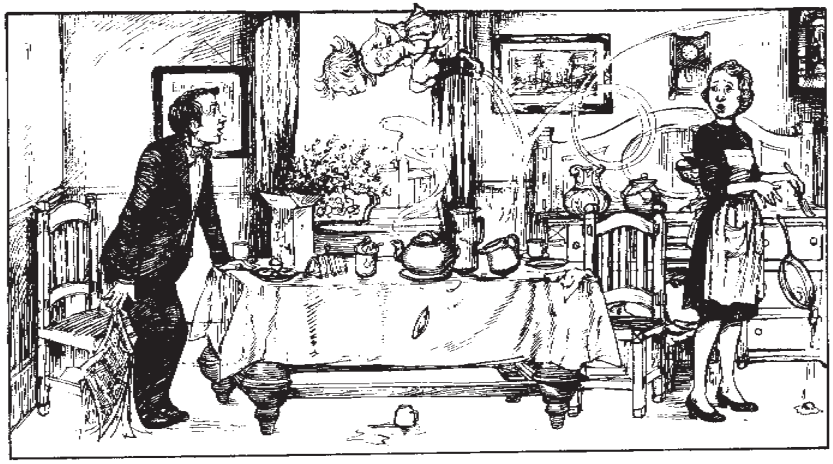

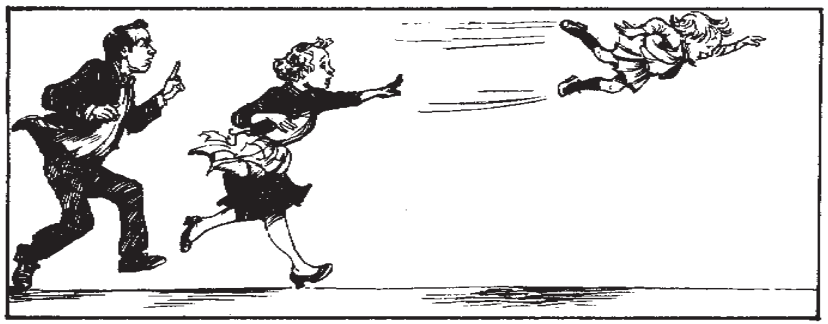

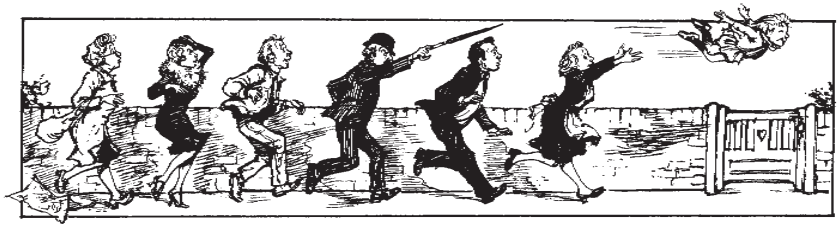

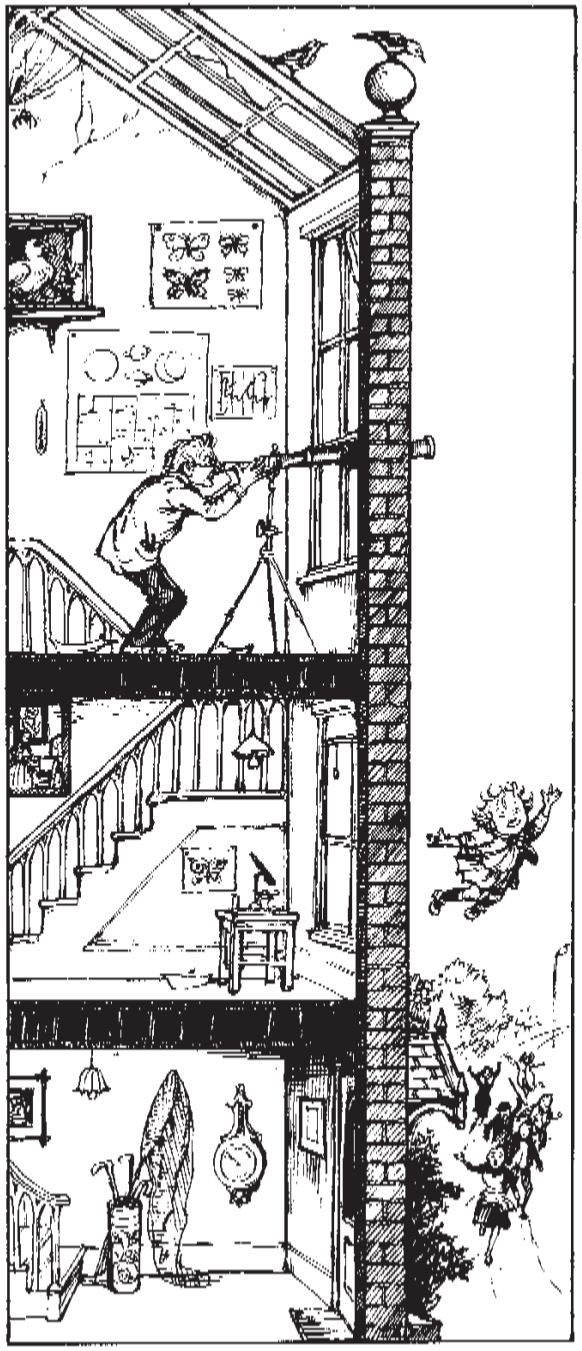

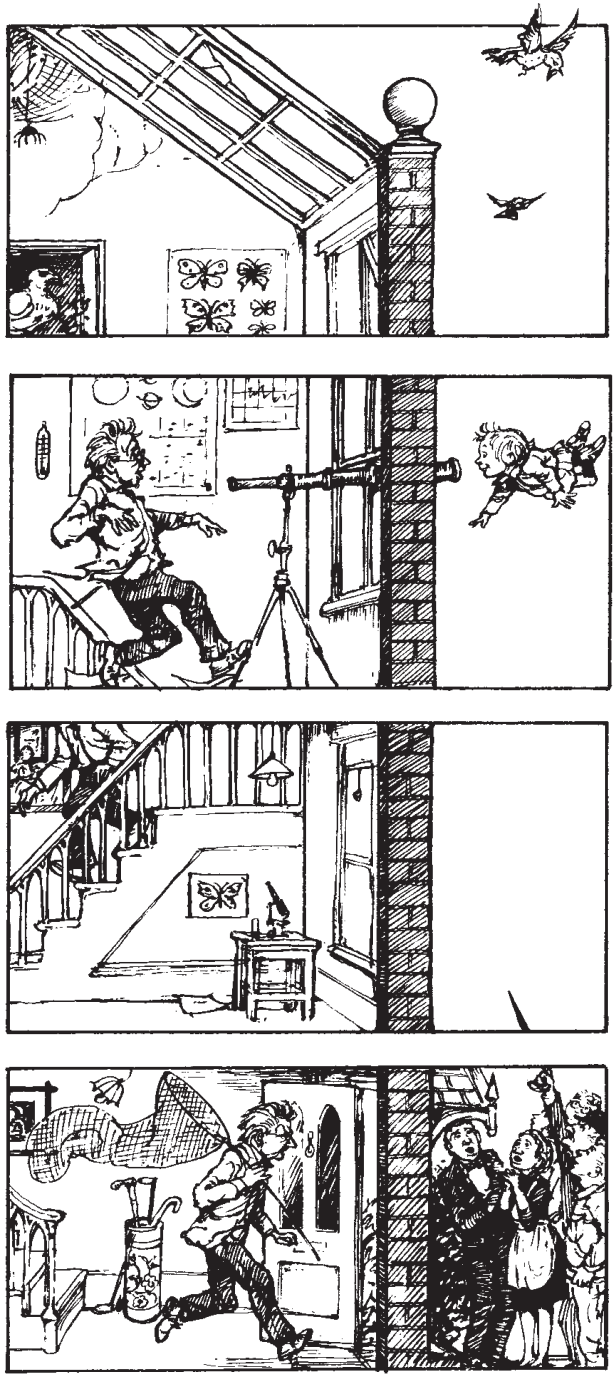

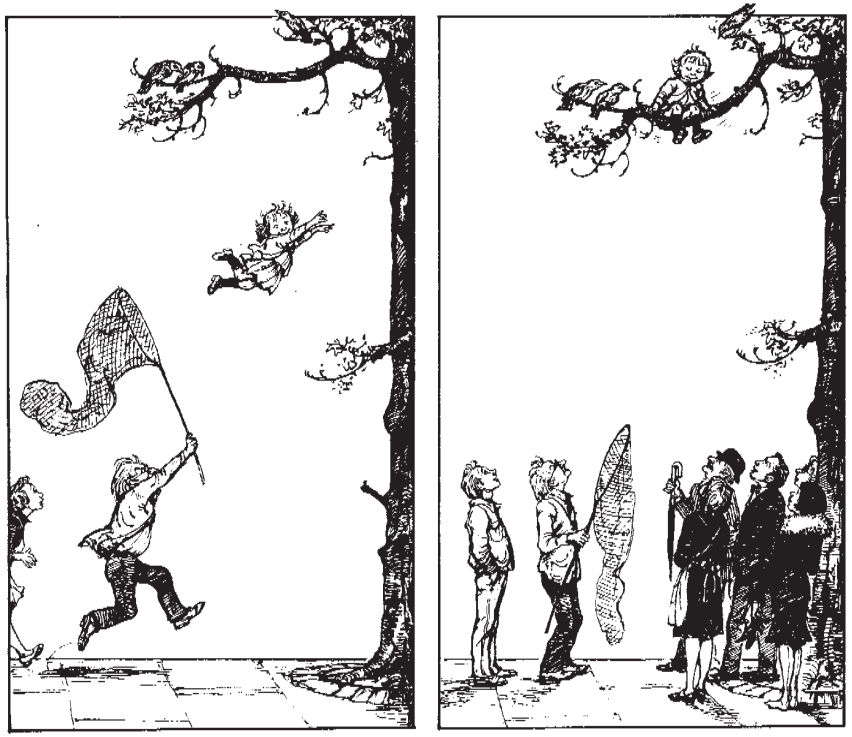

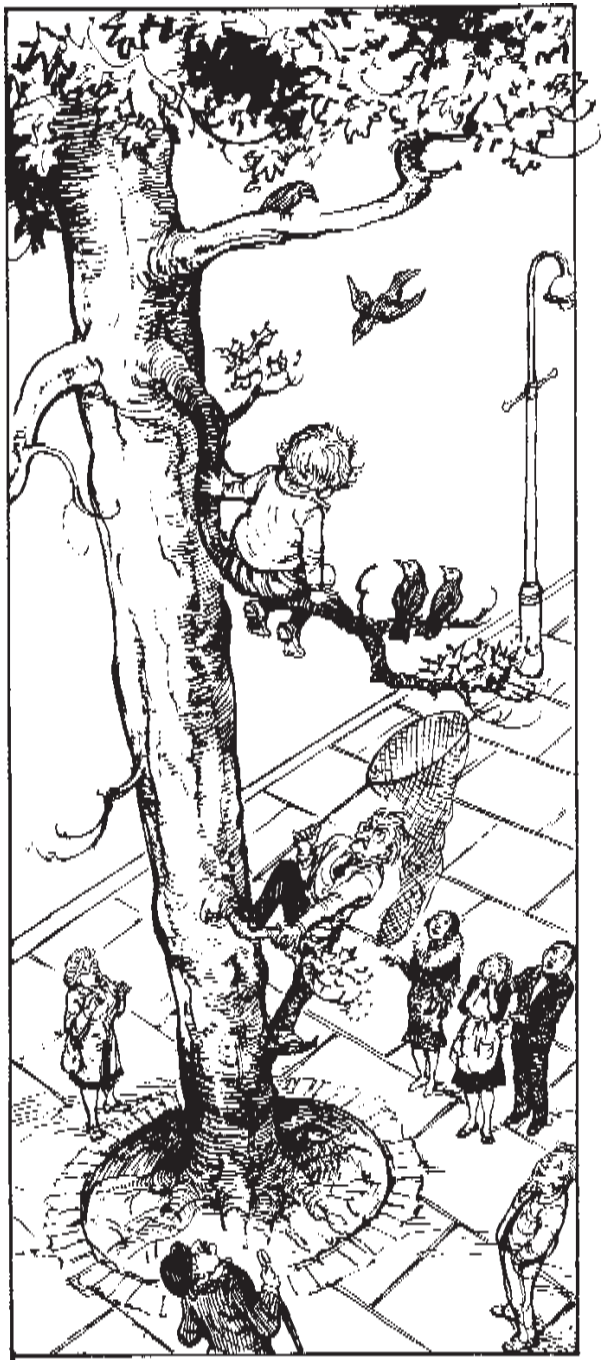

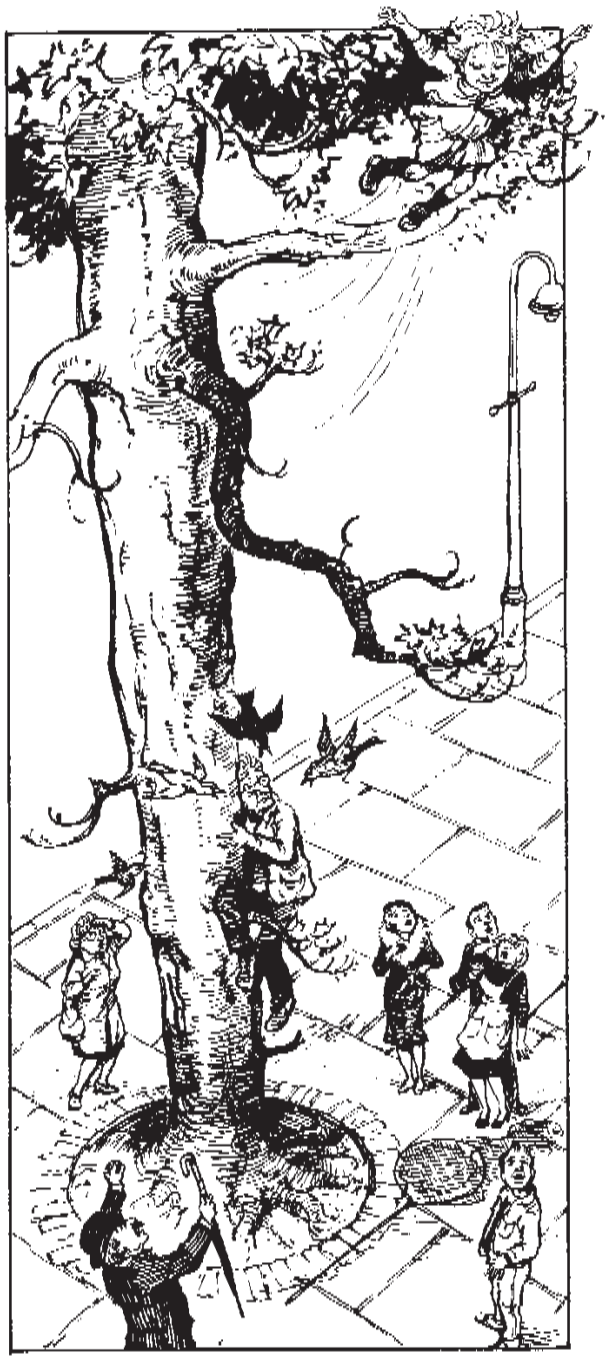

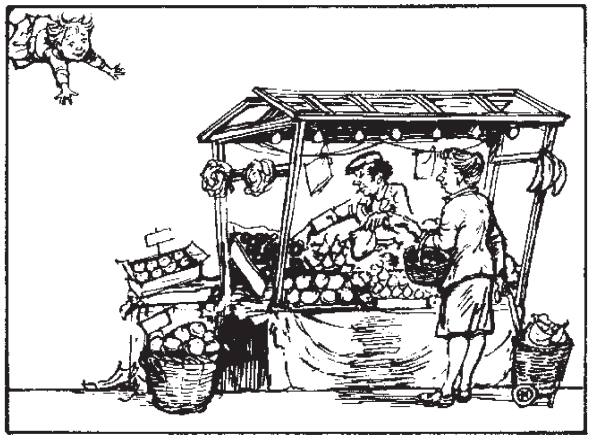

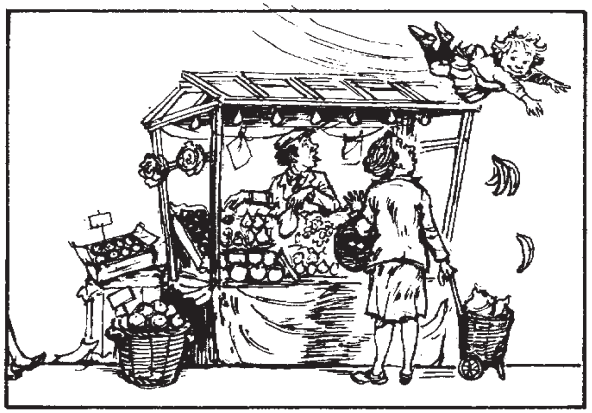

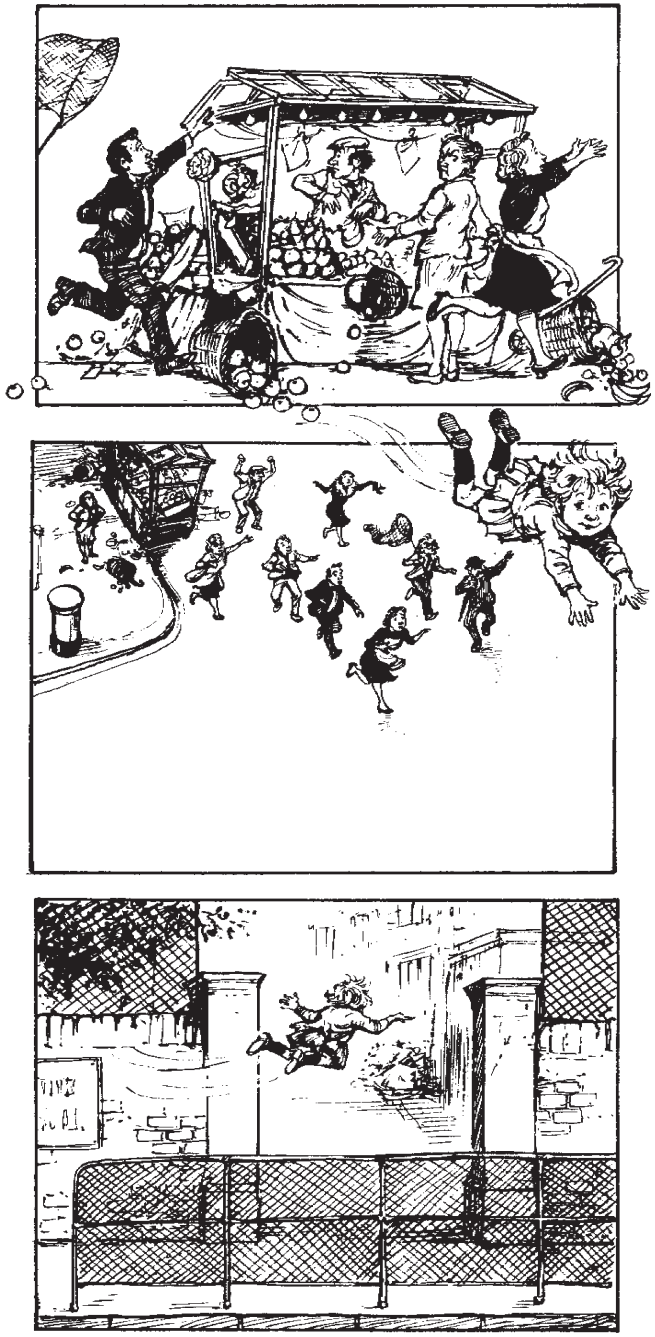

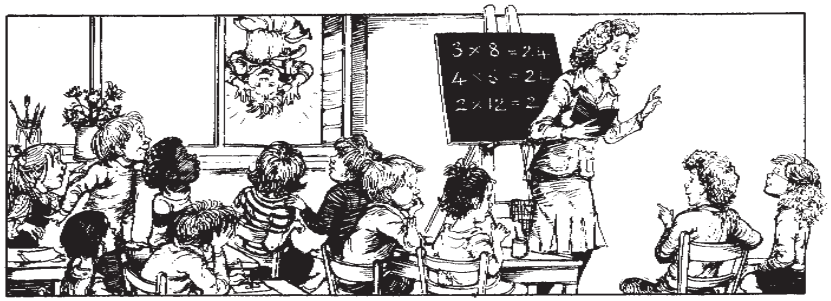
3×8=24
4×6=24
2×12=24